UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180931

UNIVERSAL
LIBRARY

भारत छोड़ो

विनोद पुस्तक मन्दिर का १५वाँ पुष्प

जय हिन्द

(राष्ट्रीय, कविताओं का संग्रह)

संकलनकर्त्ता

श्री रतनलाल बंसल

प्रकाशक—

विनोद पुस्तक मन्दिर

हास्पिटल रोड, आगरा

प्रथम संस्करण] १९४६ [मूल्य १॥)

प्रकाशक—
विनोद, पुस्तक मन्दिर,
हास्पिटल रोड, आगरा।

मुद्रक:—
महावीर प्रसाद
प्रेम प्रेस, कटरा, प्रयाग

समर्पण

सन् ४२ की अगस्त क्रान्ति में फाँसी के तख्ते को चूमने
प्रथम चुम्बन करने का गौरव प्राप्त करने वाले
२१ वर्षीय बाल शहीद

श्री हेमू कलानी के चरणों में सादर समर्पित।

निवेदन

प्रस्तुत कविता-संग्रह जैसा भी बन पड़ा है, आपकी सेवा में उपस्थित है। कहा जाता है कि कवि अपने समय का दर्पण होता है। इसका आशय केवलमात्र यह है कि कवि के संवेदनशील हृदय से उसके युग का दुःख-सुख कभी अछूता नहीं रह सकता। उसकी कृतियों में झाँक कर आप सरलता से कवि के युग की जनता के मनोभावों से परिचित हो सकते हैं। प्रस्तुत कविता-संग्रह इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। आज़ाद हिन्द फ़ौज की घटना ने भारत के मस्तिष्क को जैसा उद्वेलित और उत्साहित किया, उसका स्पन्दन आप इन कविताओं में पावेंगे। कवि की यही तो विशेषता है कि वह अपनी लेखनी के अमृत से घटनाओं को अमरता प्रदान करने की क्षमता रखता है। समय की दूरी के कारण जहाँ इतिहासकार की दृष्टि धुँधली हो जाती है, और घटनाओं के सम्बन्ध में शंका-सन्देहों का अन्धकार उत्पन्न करने लगती है, वहाँ पर भी कवि की लेखनी समान रूप से प्रकाश फैलाती है। सम्भव है कि भावी इतिहासकार इस युग की घटनाओं के सम्बन्ध में अपने तथ्यों को स्थापित करने में इस प्रकार के ऐसे ही कविता-संग्रहों से भी कुछ सहायता प्राप्त कर सकें। सम्प्रति तो इसका केवल इतना उपयोग है कि जनता की उमड़ती हुई भावनाओं को हमारे प्रतिष्ठित कवियों ने स्वर प्रदान करके उन्हें संगीत की लय में गा दिया है, और पुनरुक्ति का दोष स्वीकार करके भी मेरा मन यह कहने को

ललचा रहा है कि अपनी कला का स्पर्श देकर जनता की भावनाओं को अमरत्व प्रदान कर दिया है।

जिन कवि मित्रों ने इस संग्रह के लिये अपनी रचनायें भेजने की कृपा दिखाई है, उनके निकट मैं अत्यन्त ही आभारी हूँ। मुन्शी गंगा-प्रसाद जी 'नाज़ुक' का भी मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने 'अक़ीदत के फूल' लिख कर इस संग्रह में उर्दू कवियों का भी प्रतिनिधित्व कर दिया है। पाठक गण यदि इस संग्रह से थोड़ा सा भी उत्साह प्राप्त कर सके तो मैं अपना प्रयास और परिश्रम सफल समझूँगा।

विनीत

रतनलाल बंसल

संकलनकर्त्ता

सूची

पृष्ठ

मंगलाचरण

[स्व० श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर] ... १

आज़ाद हिन्द फौज़ का झंडा-गीत २

आज़ाद हिन्द फौज़ का प्रमाण-गीत ३

फलेगी डालों में तलवार

[श्री 'दिनकर'] ४

खून की माँग

[श्री कुमारहृदय] ५

दिल्ली चलो

[श्री सुधीन्द्र] ७

दिल्ली चलो

[श्री कुमारहृदय] ९

दिल्ली चलो

[श्री कुलश्रेष्ठ विद्याधर 'कुसुम'] ... ११

खोया दीपक

[श्री बच्चन जी] १५

अपराधी है कौन ?

[श्री रामप्रकाश जैन] १७

पृष्ठ

नेताजी के प्रति
[श्री विश्व] १६

लालकिले पर भीड़ जोड़ दो
[डा० श्यामसुन्दरलाल] २०

मतवाले सैनिक बढ़े चलो
[डा० हरिश्चन्द्र अग्रवाल] ... २१

साथी
[श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'] ... २२

सन्देश
[श्री सुधीन्द्र] २४

अभियान गान
[श्री सुधीन्द्र] २६

तुम मुझको दो ख़ून तुम्हें मैं दूँगा आज़ादी
[श्री कुलश्रेष्ठ विद्याधर 'कुसुम'] ... २७

गीत
[श्री गोपालदास 'नीरज'] २६

आज़ाद हिन्द फौज़
[श्री परदेशी साहित्यरत्न] ... ३०

आज़ाद हिन्द फौज़
[श्री प्रेमकृष्ण मिश्र] ३३

पृष्ठ

लालकिला

[श्री प्रेमकृष्ण मिश्र] ३५

बढ़े चलो बहादुरो !

[श्री रामाधार त्रिपाठी 'जीवन'] ... ३७

ये स्वतन्त्रता के दीवाने

[श्री चन्द्रशेखर पांडे एम० ए०] ... ४०

दिल्ली चलो

[श्री घनश्याम अस्थाना]

बोस गर्जन

[श्री कुमार] ४३

जय हिन्द

[श्री सुधीन्द्र] ४६

जय हिन्द

[श्री कविकेहरि कृपाण जी] ... ४६

रिहाई का शुभ दिन

[श्री गिरिजा शंकरजी पायडेय] ... ५१

प्रयाण-गीत

[श्री कृपाण जी] ५२

अक़ीदत के फूल

(१) नेता जी

पृष्ठ

(२) कैप्टन शाहनवाज़

(३) कैप्टन सहगल

(४) कैप्टन ढिल्लन

(५) कैप्टन लक्ष्मी

[जनाब मु० गंगाप्रसाद साहब 'नाज़ुक'] . ५४

लालकिले से

[हज़रत आँबाज़] ६०

नौटो सुभाष

[श्री रतनलाल बंसल] ६४

—: o :—

आज़ाद हिन्द फौज के सभापति, श्री नेता जी ! मेरा विश्वास है कि श्री सुभाष चन्द्र बोस अभी जीवित है और कहीं छिपे हुये हैं। × × मैं उनके साहस और देशभक्ति की प्रशंसा करता हूँ ! ता० ३-१-४६

३—१—४३ —गांधी जी

मंगलाचरण

❀ जय हे !

[स्व० रवीन्द्रनाथ टैगोर]

जय हे, जय हे, जय हे,
जन गण मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य-विधाता
पञ्जाब, सिन्धु, गुजरात. मराठा, द्राविड़ उत्कल बंग,
विन्ध्य, हिमाचल, यमुना गंगा. उच्छल जलधितरंग
तव शुभ नामे लागे, तव शुभ आशिष मांगे,
गावे तव जय गाथा ।
जन गण मंगलदायक जय हे भारत भाग्य-विधाता ॥
जय हे, जय हे, जय हे,
पतन अभ्युदय बंधुर पंथा युग युग धावित यात्री,
हे चिर सारथी तव रथ-चक्रे मुखरित पथ दिन रात्री,
दारुण विप्लव माझे, तव शंखध्वनि बाजे,
संकट दुख-त्राता ।
जन गण पथ परिचायक जय हे, भारत भाग्य-विधाता
जय हे, जय हे, जय हे ॥

❀ स्वर्गीय गुरुदेव के इसी गीत के आधार पर 'आज़ाद हिन्द फौज' के राष्ट्रीय गीत का निर्माण किया गया था, जो पृष्ठ २ पर उद्धृत है ।

आज़ाद हिन्द फौज़

का

झंडा-गीत

सर पर तिरंगा झण्डा,
जलवा दिखा रहा है।
कौमी तिरंगा झण्डा,
ऊँचा रहे जहां में।
हो तेरा सर्व बन्दी
ज्यों चाँद आसमां में॥

तू मान है हमारा
तू शान है हमारी।
तू जीत की निशां हो
तू जान है हमारी।
हर एक बसर की लब पै
जारी हैं ये दुआएँ॥

कौमी तिरंगा झण्डा
हम शौक से उठाएँ।
आकाश और जमीं पर
हो तेरा बोलबाला।
झुक जाय तेरे आगे
हर ताज तख्त वाला॥

हर कौम की नज़र में
तू अमन की निशां हो।
'मुश्ताक बेनवाबी'
खुश होके गा रहा है।

कौमी तिरङ्गा झण्डा
ऊँचा रहे जहां में।
सर पर तिरङ्गा झण्डा
ऊँचा रहे जहां में॥

आज़ाद हिन्द फौज़ का प्रयाण-गीत

कदम कदम बढ़ाए जा
खुशी के गीत गाए जा
यह जिन्दगी है कौम की
तू कौम पे लुटाए जा।

तू शेरे हिन्द आगे बढ़
मरने से फिर तू न डर
आस्मान तक उठाके सर
जोशे वतन बढ़ाए जा।

तेरी हिम्मत बढ़ती रहे
खुदा तेरी सुनता रहे
जो सामने तेरे चढ़े
तो खाक में मिलाए जा।

चलो दिल्ली पुकार के
कौमी निशां सम्हाल के
लालकिले में गाढ़ के
लहराए जा लहराए जा।

फलेगी डालों में तलवार

['दिनकर']

(१)

धनी अर्पण करता सर्वस्व,
तुम्हें इतिहास दे रहा मान;
सहस्रों बलशाली शार्दूल
चरण पर चढ़ा रहे हैं प्राण।
दौड़ती हुई तुम्हारी ओर
जा रहीं नदियाँ विकल, अधीर;
करोड़ों आँखें पगली हुईं,
ध्यान में झलक उठी तस्वीर।

पटल जैसे-जैसे उठ रहा,
फैलता जाता है भूडोल।

(२)

हिमालय रजत-कोष ले खड़ा,
हिन्द-सागर ले खड़ा प्रवाल,
देश के दरवाज़े पर रोज़
खड़ी होती ऊषा ले माल।
कि जानें तुम आओ किस रोज़
बजाते नूतन रुद्र-विषाण,
किरण के रथ पर हो आसीन
लिए मुट्ठी में स्वर्ण-विदान।

स्वर्ग जो हाथों को है दूर,
खेलता उससे भी मन लुब्ध।

(३)

धनी ने दिया जिसे सर्वस्व,
चढ़ाये जिसे बली ने प्राण,
उसी का लेकर पावन नाम
कलम रोती है अपने गान।
गान, जिनके भीतर संतप्त—
जाति का जलता है आकाश,
खौलता प्रतिहिंसा का भाव,
दर्प से बलता है विश्वास।
देश की मिट्टी का असिवृक्ष,
गानतरु होगा जब तैयार,
खिलेंगे अंगारों के फूल,
फलेगी डालों में तलवार।

चटकती चिनगारी के फूल,
सजीले वृन्तों के शृङ्गार,
विवशता के विषजल में बुझी
गीत की, आँसू की तलवार।

खून की माँग

[प्रांत के यशस्वी राष्ट्रीय कवि श्री 'कुमारहृदय']

खून चाहिये हमें बाढ़ पर आती हुई जवानी का
खून चाहिये हमें नाश पर गाती हुई जवानी का
खून चाहिये हमें आग सी जलती हुई जवानी का
खून चाहिये हमें प्रेम पर पलती हुई जवानी का
आज खून की माँग हुई है हँसते हुए जवानों से
आज खून की माँग हुई है बलि-पथ के दीवानों से

आज खून माँगा है हमने बेकारों बेहालों से
आज खून माँगा है हमने बेदर बेघरवालों से

बूँदों की है माँग कमण्डल आज खून से भर दो यारो
सिर पर बाँधे कफ़न खड़ा हूं खुश फ़कीर को कर दो यारो

बूँद-बूँद के रक्तदान से गङ्गा खूनी धारा हो
कन-कन रक्तदान से उजला नभ का मङ्गल तारा हो
इतना खून बहे जो धो दे दौलत के अभिशापों को
इतना खून बहे जो धो दे सम्राटों के पापों को
रक्तदान इतना हो जिसमें प्लासी का मैदान जगे
रक्तदान इतना हो जिसमें सत्तावन का गान जगे
रक्तदान इतना हो जिसमें दिल्ली का ईमान जगे
रक्तदान इतना हो जिसमें फिर से हिन्दुस्तान जगे

एक बात है, एक माँग है, मरघट आज जगा दें यारो
सिर पर बाँधे कफ़न खड़ा हूं चलो कि आग लगा दें यारो

इज्जत का उत्साह नहीं है, आज खून पावन बरसे
दिल में यश की राह नहीं है, प्रलय नीर आँगन बरसे
जर जमीन की चाह नहीं है, आज खून के घन बरसे
दौलत की परवाह नहीं है, आज लाल सावन बरसे

युग का प्यासा खड़ा हुआ हूं
मङ्गल-घट यह भर दो यारो
सिर पर बाँधे कफ़न खड़ा हूं
खुश फ़कीर को कर दो यारो

आज खून की माँग हुई है प्यासों का नेता जागा
आज लाल आशा पनपी है, सूखों का नेता जागा
दिल्ली से आवाज उठी है गूँगों का नेता जागा
आज दूर रङ्गून शहर मन्सूबों का नेता जागा

सन्देशा लेकर आया हूं, बलि-पथ मेरे सङ्ग उतर लो
सिर पर बाँधे कफ़न खड़ा हूं, आज वतन के लिए उभर लो।

दिल्ली चलो

[श्री सुधीन्द्र, एम० ए० साहित्यरत्न]

आज तिरङ्गा झंडा लेकर दिल्ली कूच करो
एक नया इतिहास देश ने फिर लिखने की ठानी,
जाग उठे थे पुनः पेशवा, वह झाँसी की रानी!
शाह बहादुर शाह! अरे था वह तो राजघराना,
आज शमा पर आज़ादी की प्रजा बनी परवाना!
आज़ादी के इस दीपक में अपना स्नेह भरो!
आज तिरङ्गा झण्डा लेकर दिल्ली कूच करो!!
सहगल, शाहनवाज, लक्ष्मी, ढिल्लन वीर हमारे,
काट रहे जेलों में घड़ियाँ, हथकड़ियों के मारे!
ये सुभाष भारतमाता के भगत, जवाहर, मोती,
दिल में जिनके आज करोड़ों ज्वालामुखियाँ सोतीं!
चलो जेल के फाटक तोड़ो! दौड़ो वीर-वरो!
आज तिरङ्गा झण्डा लेकर दिल्ली कूच करो!!
दिल्ली के इस लालकिले में गूँज गदर की गूँजी,
बने हमारे क्रय-विक्रय की नकद यही तो पूँजी!
सत्तावन, फिर बयालीस ने खींची केवल रेखा,
आज नया ही चित्र बनाओ रहा कि जो अनदेखा!
नौ अगस्त को भूल न जाओ—कुछ तो करो-मरो!
आज तिरंगा झण्डा लेकर दिल्ली कूच करो!
नीचे ही बहती है यमुना वह दिल्ली की रानी,
साक्षी है बीते वैभव की, जो है आज कहानी!

बन जायें इतिहास कहानी, उबले अगर जवानी,
भरा हुआ है नहीं नसों में केवल पतला पानी!
बढ़ो-बढ़ो, गरजो सागर की तूफानी लहरो!
आज तिरंगा झण्डा लेकर दिल्ली कूच करो!"

बँधा पड़ा है और हिमालय, गंगा चुप-चुप रोती,
हरा-भरा धानी अंचल माँ आँसू डाल भिगोती!
'लालकिला है आज पराया'—गरज कुतुब ने ताका;
हल्दी-घाटी गरज उठी है, 'आज मनाओ साका'।

चढ़ो नरक से इस धरती पर, स्वर्गों से उतरो!
आज तिरङ्गा झण्डा लेकर दिल्ली कूच करो!!
मगध, पंचनद! बढ़ो सिकन्दर दिल्ली में घुस आया,
गुर्जर बंग! चढ़ो दिल्ली ने जोर-जुल्म है ढाया!
राजस्थान! चलो दिल्ली से आज चुनौती आई,
भारत जागो! कुरुक्षेत्र में अब छिड़ गई लड़ाई!
और समस्याएँ सब अपनी कुछ दिन दूर धरो!
आज तिरंगा झण्डा लेकर दिल्ली कूच करो!!

देता है सौगन्ध तुम्हारा यह गंगा का पानी,
सारनाथ,✻गिरिनार,+अयोध्या, अमृतसर,×ब्रजरानी!
मन्दिर, मस्जिद, मठ, गुरुद्वारा, सन्तों की यह वाणी—
सुनो, सुनो अब जाग पड़ो ऐ ज्वाला भरी जवानी!

जागो महल, झोपड़ी ग्रामो, जनपद, जन नगरो!
आज तिरङ्गा झण्डा लेकर दिल्ली कूच करो!!
बनें हाथ की कड़ियाँ 'राखी', लाल लहू की 'होली',
लालकिले में लाल तिलक दे बहन लगाये रोली!

✻ बौद्ध तीर्थ + जैन तीर्थ × सिक्ख तीर्थ।

कहाँ वसंत ? जहाँ कारा की छाया इतनी काली,
विजय हिन्दी ! पा, लालकिले में सच्ची मने दिवाली !
ऐ नभ की फुलझड़ियो ! ठहरो, आज न तुम बिखरो !
आज तिरङ्गा झण्डा लेकर दिल्ली कूच करो !!

दिल्ली चलो

[श्री 'कुमारहृदय']

आज 'दिल्ली चलो'—राष्ट्र का मंत्र हो !
और 'जयहिन्द' – अब फिर न परतंत्र हो !
आज दिल्ली वतन की कहानी बने,
और जयहिन्द की राजधानी बने,
देश में कूच का यह तराना बने,
देश अपना नया आशियाना बने !

आज दिल्ली चलो अर्चना के लिये,
आज दिल्ली चलो कामना के लिये,
आज दिल्ली चलो साधना के लिये,
आज दिल्ली चलो वन्दना के लिये !

आज दिल्ली चलें—सामने हो नज़र,
आज दिल्ली चलें आख़िरी हो सफ़र,
आज मंज़िल हमारी ख़तम हो वहीं,
और पहुँचे कि लें आख़िरी दम वहीं !

आज अंधे शहन्शाह की कब्र से,
दूर रंगून में जो ढको अब्र से,
दर्द-सा उठ रहा है कि दिल्ली चलो,
कौन उफ़ कह रहा है कि दिल्ली चलो !

आज देखें हुमायूँ का वह मकबरा,
ख़ून से शाहज़ादों के जो है भरा,
औ' शपथ लें शहीदों के बलिदान की,
देश के नाम पर वेद कुरआन की !

आज बदनाम ख़ूनी क़िला देख लें,
क़र्बला जा रहा—क़ाफिला देख लें,
बन्द हैं जो वतन के मसीहा वहाँ,
आज फिर से चमन में खिला देख लें !

आज जयहिन्द की है क़सम बढ़ चलो,
आज सर हिन्द की है क़सम बढ़ चलो,
आज बंगाल की है क़सम बढ़ चलो,
आज इम्फाल की है क़सम बढ़ चलो !

आज भूलें न 'प्लासी' का मैदान हम,
आज भूलें न झाँसी का अपमान हम,
आज भूलें न क्लाइव के फ़रमान हम.
आज भूलें न डायर के ऐलान हम !

मीर क़ासिम बुलाता है दिल्ली चलो,
शाह आलम बुलाता है दिल्ली चलो,
याद जाफ़र दिलाता है दिल्ली चलो,
हाय टीपू जगाता है दिल्ली चलो !

आज दिल्ली वतन की सुहागिन बने,
आज जमुना उमड़ नील नागिन बने,
आज फिर से कुरुक्षेत्र आबाद हो,
आज कह दे कुतुब-हिन्द आज़ाद हो !

दिल्ली चलो

[श्री कुलश्रेष्ठ विद्याधर 'कुसुम']

हमारे पैर में जंज़ीर रोती है।
लहू में डूब कर शमसीर रोती है।
अधर पर स्वर नयन में पीर रोती है।
गुलामी से रँगी तस्वीर रोती है।

इधर पृथ्वी उधर आकाश का क्रन्दन।
प्रपीड़ित प्राण के हर श्वास का स्पन्दन।
हमारे हाल पर जग आह भरता है।
हृदय में अश्रु का सागर लहरता है।

हमारी श्वास में नव प्राण बन्दी हैं।
जिगर में सैकड़ों तूफ़ान बन्दी हैं।
हृदय नभ में प्रखर दिनमान बन्दी हैं।
असंख्यों नाश औ' निर्माण बन्दी हैं।

बदलने को धरा हमने उठाया सिर।
बदलने को प्रकृति हमने बढ़ाया कर।
जिगर के घाव तत्क्षण बह उठे ग़म से।
हमारे श्वास सहसा कह उठे हम से—

उभरते और उफनाते चलो दिल्ली।
विजय की भैरवी गाते चलो दिल्ली।
प्रबल तूफ़ान सा बढ़ते चलो दिल्ली।
प्रखर दिनमान सा चढ़ते चलो दिल्ली।

(२)

हज़ारों लुट चुके परिवार अब तक हैं।
हज़ारों मिट चुके संसार अब तक है।
करोड़ों फूल मिट्टी में मिले खोये।
असंख्यों प्राण कब्रों के तले सोये।

चितायें साक्ष्य भरती हैं शहीदों का।
धरा गुणगान करती हैं मुरीदों का।
मगर हम क्या करें? असहाय मानव हैं।
प्रवाहित साँस जीते जागते शव हैं।

हृदय ने और कुछ तूफ़ान माने है।
घराने और कुछ बलिदान माँगे हैं।
गगन ने और कुछ रणगान माँगे है।
जगत ने और कुछ इन्सान माँगे हैं।

लहू की बह रही धारें बुलाती हैं—
मचल कर नग्न तलवारें बुलाती हैं—
किले की लाल दीवारें बुलाती हैं—
हमारी जीत की हारें बुलाती है—

"दिलों में यदि अभी कुछ रोष बाकी है,
रुधिर में ताप पग में जोश बाकी है।
उभरते और उफनाते चलो दिल्ली।
विजय की भैरवी गाते चलो दिल्ली।"

(३)

प्रभंजन ने कभी रुकना न सीखा है।
हिमालय ने कभी झुकना न सीखा है।
हमारी फौज ने बढ़ना सदा जाना।
रण-स्थल में अथक लड़ना सदा जाना।

हमें निज शत्रु को बर्बाद करना है।
हमें निज देश को आज़ाद करना है।
जगत् में गर्व से मस्तक उठाना है।
करों से मणि, रजत कंचन लुटाना है।

हृदय के सिन्धु में नवज्वार उमड़े लो।
नयन आकाश में शतमेघ उमड़े लो।
हमारी साँस के पथ से चली आँधी।
रुधिर में सूर्य की गर्मी गई बाँधी।

निशा की कालिमा धुल सी उठी सहसा।
उषा की लालिमा खिल सी उठी सहसा।
नयन के तप्त पानी ने कहा हमसे—
हमारी ही जवानी ने कहा हमसे—

उभरते और उफनाते चलो दिल्ली।
विजय की भैरवी गाते चलो दिल्ली।
प्रबल तूफ़ान सा बढ़ते चलो दिल्ली।
प्रखर दिनमान सा बढ़ते चलो दिल्ली।

(४)

सिसकते शिशु अनेकों गोद में माँ की।
दिखाते मृत्यु की करुणामयी झाँकी।
विकल माएँ लुटातीं अश्रु के मोती।
दुखी बहिनें हज़ारों देश में रोतीं।

अरे इस ज़िन्दगी पर मौत हँसती है।
अरे इस मौत पर दुनिया विहँसती है।
विकल वैधव्य रोता है यहाँ ग़म से।
मगर करते न कुछ बनता यहाँ हमसे।

लगा दो आग इस साम्राज्यशाही को।
बुला दो शत्रु पर सहसा तबाही को।
हटा दो देश से खल-क्रूर कामी को।
मिटा दो हिन्द की जर्जर गुलामी को।

जननि के बन्धनों को काट दो वीरो।
रुधिर से सब धरा को पाट दो वीरो।
पिता का प्रेम दुख में चूर कहता है।
बहिन की माँग का सिन्दूर कहता है—

उभरते और उफनाते चलो दिल्ली।
विजय की भैरवी गाते चलो दिल्ली।
प्रबल तूफ़ान सा बढ़ते चलो दिल्ली।
प्रखर दिनमान सा चढ़ते चलो दिल्ली।

(५)

नयन में अश्रु की लड़ियाँ सिहरती हैं।
'भगत' के जेल की कड़ियाँ सिहरती हैं।
बिजलियाँ कोंधतीं आकाश में अक्सर।
उसी क्षण याद हो आता हमें 'बक्सर'।

न हम भूले 'पलासी' की निशानी भी।
'ग़दर' की रक्त सरिता की रवानी भी।
'मुग़ल साम्राज्य' की ढलती जवानी भी।
'बहादुर शाह' की जलती कहानी भी।

हृदय में पूर्व स्मृतियों का विकल स्पन्दन।
हमारे प्राण में बंगाल की धड़कन।
हमारी आँख में 'जलियाँ' सिहरता है।
हमारे ख़ून में 'बलिया' लहरता है।

दबे इस वक्ष में शोले भड़कते हैं।
जिगर में घाव रह-रह कर तड़कते हैं।
यहीं 'लक्ष्मी' प्रलय शृंगी बजाती है।
वहाँ से 'बोस' की आवाज़ आती है।

उभरते और उफनाते चलो दिल्ली।
विजय की भैरवी गाते चलो दिल्ली।
प्रबल तूफ़ान सा बढ़ते चलो दिल्ली।
प्रखर दिनमान सा बढ़ते चलो दिल्ली।

खोया दीपक

[श्री बच्चन जी]

जीवन का दिन बीत चुका था,
छाई थी जीवन की रात,
किन्तु नहीं मैंने छोड़ी थी
आशा—होगा पुनः प्रभात।

काल न ठंडी कर पाया था
मेरे वक्षस्थल की आग,
तोम तिमिर के प्रति विद्रोही
बन उठता हर एक चिराग।

मेरे आँगन के अन्दर भी
जल-जल कर प्राणों के दीप,
मुझसे यह कहते रहते थे
"माँ है प्रातःकाल समीप !!"

किन्तु प्रतीक्षा कर कर हारा
एक दिया नन्हा नादान,

बोला, "माँ, जाता मैं लेने
सूरज को धर उसके कान !"

औ' वह मेरा बातुल, चंचल
वह मेरा नटखट-शैतान,
मेरे आँगन को कर सूना
हाय, गया हो अन्तर्धान।

और नियति की चाल अनोखी,
आया फिर ऐसा तूफान
जिसने कर डालने कितने ही,
मेरे दीपों का अवसान।

हर बल अपने को बिखरा कर
होता शांत, सभी को ज्ञात,
मंद पवन में ही परिवर्तित
हो जाता हर झंझावात।

औ' अपने आँगन के दीपों
को फिर आज रही मैं जोड़,
सुदृढ़ जिन्होंने रह कर ली थी
भीषण झंझानिल से होड़।

बिछुड़े दीपक फिर मिलते हैं
मिल कर मोद मनाते हैं,
किसने क्या झेला, क्या भोगा,
आपस में बतलाते हैं।

किन्तु नहीं लौटा है अब तक
वह मेरा भोला अनजान,
दीप गया था जो प्राची को
लाने मेरा स्वर्णविहान।

अपराधी है कौन ?

[रामप्रकाश जैन]

आज विश्व के न्यायालय में अपराधी है कौन ?
इसका निर्णय स्वयं करेगी जग की जनता मौन।
आज उठो युग-युग से अछूत और दलित मानव ते।
आज उठो पैंतीस लाख, बंगाले के मरघट ते !
आज उठो ईसा मसीह तन से घावों को खोलो !
आज गुरु के अमर लाड़िलो अपनी बीती बोलो !
आज उठो सुकरात तुम्हारा साक्षी विष का प्याला !
आज उठे मानवता का मरघट वह जलियाँ वाला !
आज उठो बलिया चिमूर अब होगा न्याय तुम्हारा !
आज दूध का दूध और पानी का हो बँटवारा !
आज खड़े हैं सत्ताधारी, और मनुजता मौन !
इनका निर्णय होगा ही अब अपराधी है कौन ?
यदि जीवन है पाप जगत में दुर्बल मानव जन का
और पाप का दण्ड मृत्यु है न्याय तुम्हारे मन का
यदि जग में सद्धर्म दया का मूर्त्त पुरुष हो पापी
औ' ऐसे पापी की कीमत तुमने सूली पर मापी
यदि देश प्रेम औ' जाति प्रेम के दीवाने हों द्रोही
तो ऐसे विद्रोही का दीवालों में चुनना हो ही।
यदि सत्य विवेचन हो भोले युवकों का मन बहकाना
तो ऐसे शत सुकरातों का अच्छा विष पी मर जाना
किन्तु सत्य यों भी अधिक दिनों तक रह न सकेगा मौन
इसका निर्णय समय करेगा अपराधी है कौन ?

तुम आज लिये चालीस कोटि के प्राणों को मुट्ठी में
क्यों करते होर ढोंग न्याय का धोखे की टट्टी में

ये आज़ादी के वीर पुरुष प्राणों की शर्त लगाये
नेताजी का आह्वान तूर्य सुन युद्ध-स्थल में आये

जब अपना देश गुलामी में जकड़ा वीरों ने देखा
औ' अपनी माँ के लालों को टुकड़ों पर लड़ते देखा

जब इन दीवानों ने देखी माता की लाज उतरते
औ' जननी के नंगे वक्षस्थल पर असुरों को चढ़ते

तो घायल सिंह तड़प उठे ये तोड़ युगों का मौन
बतलाओ तो हे न्यायाधीश, है अपराधी अब कौन ?

यदि बलि पशुओं का रोना और तड़पना देख न सकते
औ' अपनी खूँ की प्यास बुझाने को जेलों में रखते

तो उठो क्रूर जल्लादो ! अपनी रक्तिम प्यास बुझाओ
औ' इन माँ के लालों की बलि से अपना पाप बढ़ाओ

किन्तु राजमद के अन्धो ! निज आँखें खोलो देखो
भारत के कोने कोने में लहराता झण्डा देखो

तुम देखो आँख पसार खड़े चालीस करोड़ सिपाही
चालीस कोटि नेताजी, ढिल्लन सहगल से नरनाही

भारत के रजकण से बनते हैं रोज सिपाही मौन
इनको क्या तुम मार सकोगे हस्ती हो तुम कौन ?

नेताजी के प्रति

[श्री विश्व]

ओ क्रान्ति दूत !
ओ देश दूत !

तुम अन्तरिक्ष में हुए लीन
देकर स्वतन्त्र संदेश दूत !

विद्रोह और विद्रोही की सत्ता में था विश्वास तुम्हें।
ले गये खींच परदेश गुमनामी के दुख के विश्वास तुम्हें॥
तुमने चाहा रणभेरी से परवशता का उत्तर देना।
तुमने चाहा निज क्रान्ति घोष से अवनी अम्बर भर देना॥
तुम चले विधातासे लड़ने तज कर अपना धन, धरणि, धाम।
तुम थे आज़ादी के राही ले सके न पल भर भी विराम॥
माना, तुमने परदेशों से मिलकर सशक्त होना चाहा।
माना, तुमने मर जाने से पहले निजत्व खोना चाहा॥
फिर भी इन सब बलिदानों की रक्तिमता में तुम थे विरक्त।
तुम देशभक्त थे, देशभक्त थे, देशभक्त थे, देशभक्त॥
था लक्ष्य हमारा और तुम्हारा एक, किन्तु था मार्गभेद।
तुम मर कर अमर शहीद हुए, भारत क्यों इस पर करे खेद॥
तुम थे कुछ भी लेकिन महानता थी उन्नत आदर्शों में।
तुम अचल रहे हिमशिला तुल्य जीवन के शत संघर्षों में॥
युग युग तक चलता रहे तुम्हारे प्राणों का संदेश दूत।

ओ क्रान्ति दूत !
ओ देश दूत !

लाल किले पर भीड़ जोड़ दो

[डाक्टर श्यामसुन्दरलाल दीक्षित साहित्यरत्न 'प्रभाकर']

दिल्ली चलो, चलो तुम दिल्ली, लालकिले पर भीड़ जोड़ दो
जो नारे नभमंडल में "बन्दी छोड़ो", "हिन्द छोड़ दो"
एक बवंडर साथ ले चलो, फिर आँधी तूफान उठा दो,
चूर चूर कर दिये गये जो नवयुग के अरमान उठा दो,
सागर डोले, पृथिवी काँपे, वह हुँकारे गर्जन भर दो
अरे उठा दो आज गुलामी के सारे सामान उठा दो,
चलो, बढ़ो, प्रलयंकर शंकर युग के बन्धन तोड़ फोड़ दो
लाल खून से बनी हुई हैं लालकिले की यह दीवारें,
सन सत्तावन में भी गूँजीं, इसीमें हुँकारे, चीत्कारें,
यहीं "मुहम्मदशाह मुगल शासन का अन्तिम दीप बुझा" था,
खूनी कथा आज भी कहतीं मोती मसजिद की मानारें,
यही समय है आज जवानी की धारा को इधर मोड़ दो,
खन खन झन झन आज बज रहीं है जिसमें लोहे की कड़ियाँ,
श्वास रुद्ध हो मरी जा रही हैं आज़ादी की वे घड़ियाँ,
आज प्राण पर प्राण झुके हैं स्वतन्त्रता का मूल्य चुकाने
चढ़ा रहे माँ के चरणों पर अपने प्राणों के पंखुड़ियाँ,
उठो, चलो, उनके प्राणों पर निज प्राणों को लगा होड़ दो
वह वह लालकिला है जिसने मुग़लों का शासन देखा है,
देखी है जय विदेशियों की, खून भरा आँगन देखा है,
देखी हैं वे शाहजादियाँ दिल्ली की सड़कों पर नङ्गी
आँसू से मीना बेगम का तार-तार दामन देखा है,
इसके पत्थर से जीवन में अपना जीवन आज जोड़ दो,
खलमल खलमल खौल उठी है कालिन्दी की शीतल धारा,
जनता ने भी जोश रोष के साथ आज "जय हिन्द" पुकारा।

मर्यादा छोड़ी सागर ने, पद प्रक्षालन के बढ़ आया
तुम भी बढ़ो और जगती में गूँजे स्वतन्त्रता का नारा,
मानव फिर मानव बन जाये दानवता का शीश फोड़ दो,
आज़ादी के दीवानों को लालकिले में राज मिलेगा,
ईसा ने जिसको पहिना था वह सोने का ताज मिलेगा,
पंडित वीर जवाहर जैसा मंत्रों से अभिषेक करेगा,
घर घर दीपावली मनेगी हमको नवल स्वराज मिलेगा,
एक इकाई सी बनजाओ वैमनस्य को बन्धु छोड़ दो,
कारागृह के द्वार तोड़ दो लालकिले पर भीड़ जोड़े दो।

मतवाले सैनिक बढ़े चलो

[डा० हरिश्चन्द्र अग्रवाल]

सैनानी तुम से दूर हुआ,
या छिपने को मजबूर हुआ।
पर अपनी आन निभाने को,
तुम पवन-चाल से बढ़े चलो।
मतवाले सैनिक बढ़े चलो।

वे वीर-धीर जो चले गये।
संदेश अमर यह छोड़ गये।
भारत है भारतवासी का,
नहीं दूर देश के वासी का।
यह गीत सुनाने घर-घर में,
तुम अलख जगाते बढ़े चलो।
मतवाले सैनिक बढ़े चलो !

बलिदानी हो बलिदान करो,
न्यौछावर अपनी जान करो।
जननी का मिल गुण-गान करो,
स्वातंत्र्य युद्ध आह्वान करो।
फिर लालकिले की चोटी पर,
तुम गाड़ तिरंगा बढ़े चलो!

जय हिंद कहो जय घोष कहो
मतवाले सैनिक बढ़े चलो!
जय-जय-जय नेता बोस कहो।
निज रिपु का हृदय हिलाने को,
तुम प्रलय मचाते बढ़े चलो।
मतवाले सैनिक बढ़े चलो!

साथी

[श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश']

(१)

गति बन्द न हो जाये साथी!

वह सत्य कि जीवन के मधुक्षण बीते जाते संघर्षों में,
वह सत्य कि बदले जाते हैं ये पीड़ा के पल वर्षों में,
वह सत्य कि धुलते जाते हैं तन-मन आमर्ष-विमर्षों में,

लेकिन मानव हो चीख उठे, यदि तू इन विषम प्रहारों से,
तो थू तेरी नादानी पर, थ तेरी भरी जवानी पर,

यह याद रहे तुझको प्रतिपल,
गति बन्द न हो जाये साथी !

(२)

यह सत्य कि उठती जाती हैं अब भी महलों की दीवारें,
यह सत्य कि तुझको घूर रहीं अब भी नभ-चुम्बी मीनारें,
यह सत्य कि वैभव करता है अब भी व्यंगों की बौछारें,
लेकिन यदि इससे घबराकर, तूने अपनी मस्ती छोड़ी,
तो थू तेरी नादानी पर, थू तेरी भरी जवानी पर,
यह याद रहे तुझको प्रतिपल,
गति बन्द न हो जाये साथी !

(३)

यह सत्य कि तेरा पथ रोके हैं खड़े हुए अत्याचारी,
यह सत्य कि तुझको घेरे हैं सब ओर निराशा-लाचारी,
यह सत्य कि तेरा साथ नहीं देते हैं जग के नर नारी,
लेकिन यदि पथ को पीठ दिखा, तूने दिखलाई कायरता,
तो थू तेरी नादानी पर, थू तेरी भरी जवानी पर,
यह याद रहे तुझको प्रतिपल,
गति बन्द न हो जाये साथी !

(४)

यह सत्य कि छोड़े हैं तूने आकर्षण, चुम्बन, आलिंगन,
यह सत्य कि तोड़े हैं तूने युग-युग के सामाजिक बन्धन,
यह सत्य कि पाले हैं तूने प्राणों में क्रन्दन, उत्पीड़न,
लेकिन गुलाम होकर यदि तू, केवल इतने पर फूल उठे,
तो थू तेरी नादानी पर, थू तेरी भरी जवानी पर,

यह याद रहे तुझको प्रतिपल,
गति बन्द न हो जाये साथी !

(५)

यह सत्य कि तू मिट जायेगा पथ चिह्नों सा चलते चलते,
यह सत्य कि तू बुझ जायेगा लघु दीपों सा जलते जलते,
यह सत्य कि तू गल जायेगा हिम खण्डों सा गलते गलते,
लेकिन बलि पंथी होकर यदि तूने यह सोच विचार किया,
तो थू तेरी नादानी पर, थू तेरी भरी जवानी पर,
यह याद रहे तुझको प्रतिपल,
गति बन्द न हो जाये साथी !

सन्देश

[श्री सुधीन्द्र]

['आज़ाद हिन्द फौज़' के 'नेताजी' सुभाषचन्द्र बोस अपनी सेना को जिन शब्दों में प्राणाचित किया करते थे उनकी छाया]

क्षितिज के उस पार
साथी !
क्षितिज के पार !
अपना रहा देश पुकार !

❀

इस नदी के पार पर्वत शृङ्खला के क्रोड़ भीतर
जन्मभू जननी बसी है स्वर्ग से भी श्रेष्ठ-सुन्दर ;

धूल वह जिससे बने हम, है हमें फिर आज पानी ;
लो, बुलाती है हमें दिल्ली हमारी राजधानी !
आज रक्त बुला रहा है रक्त को; हुँकार आई !
अब न पल खोओ,
सँभालो
शीघ्र निज हथियार !
साथी, क्षितिज के उस पार अपना रहा ख़ून पुकार !!

❀

सामने ही लो हमारे स्वच्छ सुथरा मार्ग आया,
कूच हम इस पर करेंगे, भाइयों ने यह बनाया !
शत्रु के भी बीच से हम मार्ग अपना कर बढ़ेंगे,
और बढ़ पाये नहीं, तो बीच में ही बलि चढ़ेंगे।
हम पड़े चिर नींद में लेंगे विजय का स्वप्न-दर्शन,
शेष सेना के विजय-पथ का करेंगे धूलि-चुम्बन !
मार्ग दिल्ली का
स्वयं
स्वाधीनता का द्वार।
साथी, क्षितिज के उस पार अपना रहा राष्ट्र पुकार !!

अभियान गान

[श्री सुधीन्द्र]

हम स्वतन्त्र भारतीय सैन्य के सिपाही !
हम स्वतन्त्रता-प्रयाण के असंख्य राही !!
वीर-श्री सुभाष ने अमोल चित्र आँका;
शत सहस्र सैन्य ने स्वदेश-ओर झाँका,
आह, बँधे आज हाथ,
कोटि-कोटि किन्तु साथ !
शत्रु उनका न करे बाल आज बाँका !
धूल में मिली सदैव क्रूर बादशाही !
हम स्वतन्त्र भारतीय सैन्य के सिपाही !

यह दुरन्त दासता चुभी त्रिशूल-गाँसी !
आज उठा पेशवा कि आज उठी झाँसी !
आज उठा सिक्ख संग,
आज उठा अंग-बंग,
मिले जन्म-जेल, मिलें सूलियाँ कि फाँसी !
किन्तु बुझेगी न कभी आग प्राण-दाही !
हम स्वतन्त्र भारतीय सैन्य के सिपाही !

'दिल्ली चलो'—आज यही राष्ट्र ने पुकारा,
'जय-हिन्द' आज उठा घोष यह हमारा !
दिल्ली—जय: चलो हिन्द !
साक्षी हों गंग-सिन्ध !
आज जिये बार बार वह सुभाष प्यारा !
हो स्वतन्त्र मातृभूमि, पूर्ण चित्त चाही !
हम स्वतन्त्र भारतीय सैन्य के सिपाही !!

"तुम मुझको दो खून, तुम्हें मैं दूँगा आज़ादी"

[श्री कुलश्रेष्ठ विद्याधर 'कुसुम']

बीती निशा, गगन में नूतन आभा मुस्काई।
शंख बजा, लो महासमर की नववेला आई।

'चलो-चलो'; 'हाँ बढ़ो-बढ़ो' का कोलाहल जागा।
बन्दी भारत के शव में भी सहसा बल जागा।

साँसों ने भी करवट बदली, दिल ने अँगड़ाई।
प्राणों में धड़कन आँखों में ज्योति उतर आई।

पैरों में बढ़ने की इच्छा, हाथों में ताक़त।
और हृदय में जंग जीतने की जागी हिम्मत।

रग-रग में तूफ़ान उमड़ते, दृग में अँगारे।
निकल पड़े घर-घर से माँ की आँखों के तारे।

प्रलयंकर का खाली खप्पर सहसा बोल उठा--
"तुम मुझको दो खून, तुम्हें मैं दूँगा आज़ादी।"

पथ की मिट्टी सिहर उठी, लो पैरों को छूकर।
वायु ठगी सी रह-रह जाती साँसों के भीतर।

पैरों की गति पर लज्जित थीं जीवन की घड़ियाँ।
चले दिवाने चले काटने माता की कड़ियाँ।

चल दी सेना सिंगापुर से ब्रह्मा पर धावा।
यही नहीं, सारे भारत को लेने का दावा।

'जयस्वदेश,' 'जयहिन्द' पवन सा बढ़ते ही जाना।
जब तक दिल्ली फ़तह न होवे, लड़ते ही जाना।

लालक़िले पर झण्डा लहरे, रुकना नहीं ज़रा।
हिम गिरि सा ऊँचा हो मस्तक, झुकना नहीं ज़रा।

प्राची के उस सिंहद्वार से आई यही सदा--
"तुम मुझको दो ख़ून, तुम्हें मैं दूँगा आज़ादी।"

काँप उठा अम्बर का कण-कण, कापा भूमंडल।
काँप उठे शीश, सूर्य, सितारे प्रकृति हुई चंचल।

सागर की नीरव लहरों में तूफ़ानी हलचल।
बहा प्रभंजन, हिली दिशाएँ, उद्वेलित क्षण-पल।

मुर्दा जग में नए सिरे से साँसों का फेरा।
रोते यौवन के अधरों पर हासों का फेरा।

जीर्ण-पुरातन की समाधियाँ, नया सृजन जागा।
नए विश्व की नव निर्मिति में नव जीवन जागा।

इनक़लाब, विद्रोह, क्रान्ति, दानवता थर्राई।
'भारत छोड़ो' की आवाज़ें कण-कण से आईं।

सिहर उठी मानवता भोली गूँज उठा नारा--
"तुम मुझको दो ख़ून, तुम्हें मैं दूँगा आज़ादी।"

गीत

[श्री गोपालदास 'नीरज']

एक दिन भी जी मगर तू ताज बनकर जी,
अटल विश्वास बनकर जी,
अमर युग-गान बनकर जी!

आज तक तू समय के पदचिह्न सा खुद को मिटाकर,
मर रहा निर्माण जग-हित एक सुखमय स्वर्ग सुन्दर,
स्वार्थी दुनियाँ मगर बदला तुझे यह दे रही है—
भूलना युग-गीत तुझको ही सदा तुझसे निकल कर,
'कल' न बन तू जिन्दगी का 'आज' बनकर जी,
जगत-सरताज बनकर जी।

जन्म से तू उड़ रहा निस्सीम इस नीले गगन पर,
किन्तु फिर भी छाँह मञ्जिल की नहीं पड़ती नयन पर,
और जीवन-लक्ष्य पर पहुँचे बिना जो मिट गया तू,
जग हँसेगा खूब तेरे इस अथक असफल मरण पर,
ओ मनुज! मत विहग बन आकाश बनकर जी,
अटल विश्वास बनकर जी!

एक युग से आरती पर तू चढ़ाता निज नयन ही,
पर कभी पाषाण क्या ये पिघल पाये एक क्षण भी?
आज तेरी दीनता पर पड़ रहीं नजारें जगत की,
भावना पर हँस रही प्रतिमा धवल, दीवार मठ की,
मत पुजारी बन स्वयं भगवान बनकर जी।
अमर युग-गान बनकर जी॥

आज़ाद हिन्द फौज

[परदेशी साहित्यरत्न]

(१)

सत्त्वान की महाक्रांति का
यह इतिहास सुनाएगी,
नई फौज आज़ाद हिंद की
सोया देश जगाएगी।

यह आँधी की सखी कि साथी
बढ़ती प्रलय-प्रवाहों-सी,
उठी और हो गई दूर
निद्रा दुनिया के शाहों की,

कौन जानता काँप उठेंगे,
तख्त ताज उन्तालिस में,
हम होंगे स्वाधीन शीघ्र ही
शंका थी किसको इसमें ?

कौन सुनेगा हाल ग़दर का
हमको याद जबानी है ?
जहाँ देश आज़ाद बनाने
उजड़ी लाख जवानी है,

लुटा सल्तनत दिल्ली को वह
बना बहादुर शा' बाग़ी,
नाना बढ़ा, बढ़ी झाँसी की रानी-
थी दुनिया जागी।

(२)

आज़ादी की आग देश में
मंगल पांडे सुलगाता,
वीर तांतिया टोपी उसको
आहुति दे दे धधकता,

खबर हुई कलकत्ते तब तक
फैल गई चिगारी थी,
अब तो रण के मैदानों में
खुल लड़ने की बारी थी,

बन्धु, फौज आज़ाद हिन्द की
इसकी अमर निशानी है,
तलवारों की झंकारों में
कहती वही कहानी है,

उसका भी उद्देश्य, देश की—
आज़ादी लड़—लेना है
लगे प्राण का मोल इसे तो
हँस आहुतियाँ देना है,

सत्तावन के महाद्रोह का
यह इतिहास सुनाएगी
नई फौज आज़ाद हिन्द की
सोया देश जगाएगी।

(३)

उसने डलहौज़ी जीता, यह
आचिनलेक हराएगी,
उठी काल की ज्वाल-माल
जालिम का महल जलाएगी,

वहाँ सैन्य के आगे बढ़ता
नाना जैसा रण-जेता,
जहाँ लहर-सी लहराती—
फौजों का बोस बना नेता,

बोस कि जिसका रोष-काल का—
भेजा पहला न्यौता है,
अरे मिटेगा वही मौज में
जो कंटक-दल बोता है,

अमर फौज आज़ाद हिन्द की
बढ़ी बाढ़-सी आएगी,
पथ के पत्थर बहा, देश के—
घर-घर अलख जगाएगी।

सत्तावन की फौज चढ़ी,
गोरों का नाम मिटाने को,
और उठी यह चूर दासता की—
कड़ियाँ कर जाने को।

(४)

उसने कलकत्ते कूँच किया,
यह लन्दन आग लगाएगी,
उसने गाई कड़ी एक, यह—
पूरा गीत सुनाएगी,

इसकी हुँकारें गर्जन बन
गूँज गगन में जाएगी,
कौन शक्ति दुनिया की बोलो
इसे रोक ही पाएगी?

स्वतन्त्रता का अगम सिंधु यह,
थाह पत्नों में लाएगी,
नई फौज आज़ाद हिन्द की,
सोया देश जगाएगी !

आज़ाद हिन्द फौज़

[प्रेमकृष्ण मिश्र]

विद्रोही वीरों की टोली,
निकली उर में विश्वास लिए,
बढ़ चली तरङ्गों सी भू पर,
भरने की मादक चाह लिए।

दीवाने सब आज़ादी के,
नेताजी के केवल अनुचर,
बढ़ते ही जाते आगे थे,
कटते, गिरते, मरते, भू पर।

मानवता के प्रति प्यार लिए,
आज़ादी की हुँकारों पर,
विद्रोही उर में आग लिए,
बन वायु बहे अंगारों पर।

था कौन वहाँ, रोने वाला ?
था कौन वहाँ, हँसने वाला ?
था कौन वहाँ, रुकने वाला ?
था कौन वहाँ, सुनने वाला ?

रोता बस केवल अम्बर था,
हँसता था बस केवल समीर,
रुकते थे डर कर शत्रु वहाँ,
सुनती थी धरती हृदय चीर।

हिल उठते थे तृण तृण कण कण,
सुन सुन कर उनकी हुँकारें,
कँपती गिरती थीं उदधि लहर,
सुन उरवीणा की झंकारें।

शर्माता था चंचल समीर,
लख कर गति उनकी वेगवान,
बन जाती थी रजनी नीरव,
सुनने उनके बलिदान गान।

हम क्यों न करें अपत तन मन,
अपने उन सेनापतियों पर,
बलिदान हो गई थी जिनकी,
हर एक श्वास 'नेताजी' पर।

काँपा जिनसे अवनी अम्बर,
वे स्वतन्त्रता के दीवाने,
जो दीप जला रणचण्डी का,
बन गये स्वयं ही परवाने।

जो कहते हैं उनको द्रोही,
हम उनको पागल कहते हैं,
अपने ऐसे नरसिंहों पर,
सर्वस्व निछावर करते हैं।

काँपी थी धरती, अम्बर भी गरजा था,
एक बार भीषण 'जय हिन्द' हुँकार सुन!
लहरें उदधि की हँसी थीं प्रिय अन्तर खोल
'दिल्ली चलो' गर्जन की अनुपम डङ्कार सुन!!

नेताजी बोस के प्रबल जयनाद सुन,
झंझा का नर्तन भी मूक था हो गया!
'दूर परतंत्रते! स्वागत स्वतंत्रते प्रिय!'
कहता हुआ सैनिक दल शून्य में सो गया!!

लाल किला

[श्री प्रेमकृष्ण मिश्र]

लाड़िली माँ के भाग्य सिन्दूर,
लड़ाकों के ओ कारागार।
किशोरों के तुम स्वप्न मधुर,
लालिमा के प्रिय पारावार!!

कर सका आज तक क्या कोई,
बन्दी अम्बर के तारों को!
बोलो तो है रोका किसने?
बहती सागर की धारों को।

जलधर के गिरते आँसू को,
बोलो जग में पोंछा किसने!
झंझा के प्रबल झकोरों को,
है मूक किया बोलो किसने!

क्या सोच बने हो कारा तुम,
आज़ादी के उन सिंहों की।
लेना स्वतंत्रता, मर जाना,
इच्छा बस जिनके जीवन की।

कहती हैं यमुना की लहरें—
यदि ढह पड़ता अच्छा होता!
सिंहों को बन्दी करने का,
क्यों लांछन आज लगा होता।

तेरे अन्तर में बन्द आज,
हे भारत की मादक आशाएँ,
तेरे प्रांगण में डोल रही,
आज़ादी की चिर अभिलाषा।

बोलो है कैसा पागलपन,
कहना उन वीरों को द्रोही!
जो बढ़े समर में प्राण छोड़,
औ' बने देश हित निर्मोही।

भारत के भावी सेनापति,
प्रिय! तेरी आज धरोहर है,
देखो न व्यथा उनको छूये,
बन्दी माँ के सुत नाहर हैं।

बढ़े चलो बहादुरो ! बहादुरो ! बढ़े चलो

[श्री रामाधार त्रिपाठी 'जीवन']

बढ़े चलो बहादुरो ! बहादुरो ! बढ़े चलो !
है फ़र्ज़ ज़र वो जान दो,
न जाने आन-बान दो,
तनी हो तोप जिस जगह
तुम अपना सीना तान दो।
बढ़े चलो बहादुरो ! बहादुरो ! बढ़े चलो !

अजब जुनून-जोश हो,
किसी को कुछ न होश हो,
कि बच्चा-बच्चा क़ौम का,
शहीद सरफ़रोश हो।
बढ़े चलो बहादुरो ! बहादुरो ! बढ़े चलो !

रहे न रञ्जो-ग़म बढ़ो,
दिखाओ ज़ोर-दम बढ़ो।
न यों क़दम-क़दम बढ़ो,
जवानो ! एकदम बढ़ो।
बढ़े चलो बहादुरो ! बहादुरो ! बढ़े चलो !

ये बेशऊरी क्यों रहे ?
ज़रा-सी दूरी क्यों रहे ?
तुम्हारे चलते आज भी
सफ़र अधूरी क्यों रहे ?

ये स्वतन्त्रता के दीवाने

[श्री चन्द्रशेखर पांडे, एम० ए० बी० टी०]

नाना कष्टों को झेल रहे, देशोद्धार का व्रत ठाने।
ये स्वतन्त्रता के दीवाने॥

[१]

ये वीर युवक रणरङ्गी हैं,
ये अभय, मृत्यु के सङ्गी है,
अरि-असुर हेतु बजरङ्गी हैं,
ये सेना-नायक जङ्गी हैं,

इनको विलोक धीरज बाँधा, अति पुलकित हो भारत माँ ने।
ये स्वतन्त्रता के दीवाने॥

[२]

माँ के नैनों के तारे हैं,
परिजन-प्रिय, पिता-दुलारे हैं,
प्राणों के प्राण बिचारे हैं,
कुछ के तो यही सहारे हैं,

पर सबकी ममता तज, माता को मुकुट चले हैं पहिनाने।
ये स्वतन्त्रता के दीवाने॥

[३]

घर-बार, पिता-माता छोड़े,
स्त्री-बच्चों का सुख छोड़ा,
प्यारे मित्रों का सङ्ग छोड़ा,
खाना-पीना-सोना छोड़ा,

सब छोड़-छाड़ आज़ाद फौज के बने सिपाही दीवाने।
ये स्वतन्त्रता के दीवाने॥

[४]

ऐ कैप्टन शाहनवाज़ जियो,
ऐ कैप्टन सहगलवीर जियो,
ऐ ढिल्लन लेफ़्टीनेंट जियो,
आज़ाद फौज के सभी जियो,

गाएगा भारत सदा तुम्हारे त्याग-वीरता के गाने।
ये स्वतन्त्रता के दीवाने॥

[५]

अन्यायी अति अत्याचारी,
दे रहे कष्ट उनको भारी,
पर याद रखे यह अधिकारी,
उनके सङ्ग है जनता सारी,

यदि हुआ उन्हे कुछ तो अशांति की लहर लगेगी लहराने।
ये स्वतन्त्रता के दीवाने॥

[६]

भारतवासी आँखें खोलो,
आज़ाद फौज की जय बोलो,
अपना-अपना भी बल तोलो,
कस कमर देश के संग होलो,

बोलो मिलकर 'जय हिन्द' सभी, सुन शत्रु लगे बस थर्राने।
ये स्वतन्त्रता के दीवाने॥

दिल्ली चलो

[घनश्याम अस्थाना]

दूर नहीं दिल्ली की मञ्जिल, बढ़ते चलना राही !

पड़ने लगीं सुनाई सदियों के बन्दी की आहें !
पड़ने लगीं सुनाई घायल माँ की सर्द कराहें !
पड़ने लगीं सुनाई अब तो बेड़ी की झनकारें !
पड़ने लगीं दिखाई अब तो रोती सी मीनारें !

खड़ी कुतुबमीनार दूर पर लज्जा अवनत होकर।
शायद कहना चाह रही हो यह पुकारकर, रोकर,
"मेरे अंतर में अंकित सदियों की अमर कहानी,
मैं न मूक पाषाण, आज, मेरे नयनों में पानी।"

अग्निपुञ्ज बन उठीं आज 'जय हिंद' कोटि जयकारें !
आज लड़खड़ा उठीं किले की यह खूनी दीवारें !
बढ़ता चले कारवाँ, बढ़ती चले हमारी टोली,
चलो खेललें आज शोषकों के शोणित से होली !

दिल्ली चलो, बजा दें फिर गढ़ की ईंटों से ईंटें !
हुईं जहाँ सत्तावन में भू-लुण्ठित मुग़ल किरीटें !
इन अपमानों को अन्तर में गढ़ते चलना राही !
दूर नहीं दिल्ली की मञ्जिल, बढ़ते चलना राही !

करते नभ से पथनिर्देशन आज शहीद हमारे !
चमक चुके हैं जो युग युग तक बन कर चाँद सितारे !
निष्क्रिय सी बहती है यमुना आज अभागिन बनकर,
किंतु शोषकों को न कहीं यह डस ले नागिन बनकर !

निकल रही है आज हुमायूँ के स्मारक से आहें···!
सिसक रही है आहत चिश्ती-ख्वाजा की दरगाहें!
सदियो की सोई क़बरों से आतीं विकल पुकारें—
"आज विजय में परिवर्तित करलो जीवन की हारें।"

दिल्ली चलो, जहाँ नौकरशाही ले तलवारों को,
चली रोकने फटते ज्वालामुख के उद्गारों को—
चले बुझाने ये कुछ बादल दीप्तिमान तारो को,
बन्दी करने चले, राष्ट्रवेदी के उपहारों को,

अग्नि-केतुओं को बन्दी करके लज्जित है कारा,
हथकड़ियां भी तड़क उठीं, सुन नभ-गुंजित-जय-नारा!
"ख़ून-ख़ून" कह बलि शिखरों पर चढ़ते चलना राही!
दूर नही दिल्ली की मञ्जिल, बढ़ते चलना राही!

बोस-गर्जन

[श्री कुमार]

गरज रहा रङ्गून हाल में बोस वीर मरदाना था।
इस आज़ाद हिन्द सेना से हमने सुना फिसाना था॥

कैसे क्रुद्ध केहरी भागा अब तक नहीं समझ पाया।
जादू टौना में बौना बन—बौना-दल में दिखलाया।
उसके दिल में धधक रही थी महाक्रांति की भीषण आग।
सिन्धु तीर हुँकार भरे कहता दुनियाँ के कायर जाग।
स्वतन्त्रता का पूर्ण पुजारी भारत का दीवाना था।

रक्तहीन सूखी हड्डी के जब देखे पंजर पीले।
दीन-हीन मजदूर किसानों पर चलते देखे गोले।
भारत माता की छाती पर भून रहे कितने होले।
अत्याचारों की आँधी में जब जग के आसन डोले।
बलिया औ' जलियान बाग़ का बदला उसे चुकाना था॥

खूनी पञ्जों को फैलाए जापानी खाने बैठे।
क्रोध भरी कुटिला कमान-सी वह त्योरी ताने बैठे।
देखी वीर बोस ने हालत विषधर सा फुङ्कार उठा।
टूटी हुई बीन का मानों तार-तार झंकार उठा।
ऐसी विषम परिस्थिति में क्या नहीं खूँन गरमाना था॥

यही सोचकर वीर बाँकुरा, तोड़ भेद की भित्ति महान।
लगा संगठन करने उनका, जो स्वदेश पर हों बलिदान।
घोर घोष जब हुआ हाल मे थर-थर काँपी दीवारें।
महाप्रलय की वहाँ तुरत ही लगी चमकने तलवारें।
था दुर्भाग्य हमारा, ऐसा दृश्य देखने जाना था॥

शैल-शिखर-सा खड़ा हुआ जब बोल रहा निर्भय बोस।
कायरता भी लगी काँपने उड़ने लगे भलों के होश।
दमक रहा दर्पण-सा मस्तक, चश्मा दो मानों तारे।
'जय आज़ाद हिन्द-सेना' के वहाँ लग रहे थे नारे।
भारत माँ को मुक्त कराने, मर मिटना प्रण ठाना था॥

हिन्दू, सिक्ख, मुसलमानों की यही त्रिवेणी की धारा।
किए प्रतिज्ञा वहाँ डटे थे, नहीं जिन्हें जीवन प्यारा।
वीरों के हृदयों में उस दम उठते देखा एक उफान।
ज्वार आ गया हो समुद्र में, या आया भूकम्प महान।
उस सेनानी का बल-पौरुष एक बार पहचाना था॥

एक पुकार उठी जोरों से बैठा है जो यहाँ समाज।
स्वतंत्रता की बलिवेदी पर किसको शीश चढ़ाना आज।
किन वीरों को अपनी-अपनी आज जवानी पर है नाज।
बढ़े यहाँ तब आते देखे, ढिल्लन-सहगल-शाहनवाज।
इनको अपनी मातृभूमि पर सब कुछ भेंट चढ़ाना था।

गूँज उठा वह हाल हिन्द को हम आजाद बनाएँगे।
सदा उठी कोने-कोने से हम सर्वस्व लुटाएँगे।
बाधाओं के अड़े हिमालय, भूपर उन्हें सुलाएँगे।
किन्तु तिरङ्गा प्यारा झण्डा, दिल्ली पर फहराएँगे।
उसे शक्ति के बल पर अपना वैभव पूर्व दिखाना था।

देखा वीर बढ़े जाते हैं जागा जोश जवानों में।
लगा टपकने खूँन आँख से आग लगी अरमानों में।
कोई दुर्गा बनी पद्मिनी कोई बन झाँसी वाली।
कूद पड़ी समराङ्गण में चेहरों पर चढ़ आई लाली।
वीर रमणियों का वह जीवित जौहर उन्हें जगाना था।

छुरी और चाकू ले-लेकर बढ़े युवतियों के बादल।
आँख फाड़ आकाश देखता, एक अजीब मची हलचल।
छेदी गई उगलियाँ कोमल चले रक्त के फव्वारे।
रँगे प्रतिज्ञा-पत्र गए, गिर गए गगन के भी तारे।
ऐसे वीर हिन्द को फिर क्या पराधीन रह जाना था।

एक नहीं, दो नहीं, वहाँ शत-शत का सिन्धु उमड़ आया।
साहस का हिल गया हृदय, दासता-दैत्य भी दहलाया।
करने चलीं आरती 'लक्ष्मी', कहती थी सबसे यह टेर।
देर भले चाहे हो जावे, होगा नहीं कभी अन्धेर।
देश-द्रोहियों के चेहरे पर, कालिख उसे लगाना था।

'आजादी या मौत' हमारे इस जीवन का सौदा है।
माता के बन्धन काटेंगे पक्का बना मसौदा है।
जादू उसे सभी कहते हैं जो चढ़कर सर पर बोले।
बोस तुम्हारी समता में अब कौन तुला किसको तोले।
तेरी जिन्दादिली—सामने सबको शीश झुकाना था।

पराधीन भारत का राणा, वीर शिवाजी का अवतार।
तेरे इस अनमोल त्याग पर आज स्वर्ग का सुख बलिहार।
मिट कर जीने वाले, ओ! राष्ट्र-प्रेम के दीवाने।
हँस-हँस कर इस दीप-शिखा पर जलने वाले परवाने।
वीर-प्रसू दुखिया माता की तुझको लाज बचाना थी।

आओ भारतवासी देख लगी नुमायश वीरों की।
लालकिले दिल्ली में आए समर-कुशल रणधीरों की।
इन वीरों की भव्य भावना भारत में भरती जाए।
युग-युग तक इनके साहस का सारा विश्व गीत गाए।
एक बार 'जय हिन्द' बोल, बढ़ चलो वीर का बाना था।

जय हिन्द

[श्री सुधीन्द्र]

है 'जय हिन्द' हमारा नारा—
जनता ने है आज पुकारा।
जिस दिन वीर सुभाष हमारा
बना अग्नि के पथ का राही
उस दिन भारत की पलकों में
नाची स्वतन्त्रता मनचाही

बढ़ा पञ्च नद, चढ़ा युद्ध-मद,
सेना दौड़ी बहा महानद,
भाड़े के अब कहाँ ? बने वे आज़ादी के वीर सिपाही।

बन्दी माँ के उन लालों ने
जब पलकों की ओर निहारा
है 'जय हिन्द' हमारा नारा—
जनता ने है आज पुकारा।

परतन्त्रों का धर्म रहा है
बंधन से विद्रोह मचाना
परतन्त्रों का धर्म रहा है
मन प्राणों में आग जगाना

जीवित है तो कुछ कर जाना
करते, करते ही मर जाना
दिल्ली जब तक दूर हमारी, आजादी की फौज उठाना

जब तक हम स्वाधीन नहीं हैं
"नौ अगस्त" त्यौहार हमारा।
है 'जय हिन्द, हमारा नारा—
जनता ने है आज पुकारा।

व्यर्थ नहीं जायेगी मेरे
शत शत प्राणों की कुर्बानी
लिखती आई क्रान्ति रक्त से
स्वतन्त्रता की अमर कहानी

बढ़ती है जब जब तरुणाई
सुनती है तब तब शहनाई

विद्रोही बलिदान माँगती स्वतन्त्रता--हृदय की रानी
विजयी कल हारा देखेगा
विजयी होगा कल जो हारा।
है 'जय हिन्द' हमारा नारा—
जनता ने है आज पुकारा।
कौन कह रहा स्वतन्त्रता के
पुण्य समर में मिली पराजय ?
अणु में और परम अणु में भी
आज शक्ति का भरा हिमालय।
जनता की यह क्रान्ति अभंजन
झुका न सकता स्वयं जनार्दन
कड़ियों के कण कण में जागी, बिजली विद्रोहों की अक्षय
अन्यायी, बस एक पलक में
टूटेगी लोहे की कारा।
है 'जय हिन्द' हमारा नारा—
जनता ने है आज पुकारा।
खड़े हिमालय ने ललकारा
'कुचले तू वज्रों की काया'
'कमर कसी है विद्रोहों ने'।
ले मेरा विन्ध्य चिल्लाया
तक्षशिला, नालंद, अवन्ती
आज मनाते क्रान्ति-जयन्ती
ब्रह्मपुत्र गरजा प्राची में भागो क्षितिज अरुण हो आया
मुक्त करो मेरी जननी को
गाती है गंगा की धारा।
है 'जय हिन्द' हमारा नारा।
जनता ने है आज पुकारा।

जय हिन्द

[कविकेहरि श्री 'कृपाण']

'जय हिन्द' मन्त्र हमको प्यारा।

'जय हिन्द' पाठ सन्ध्या पूजन,
'जय हिन्द' कीर्त्तन यज्ञ हवन,
'जय हिन्द' सुगीता रामायन,

बस यही गंग-जमुना धारा।
'जय हिन्द' मन्त्र हमको प्यारा॥

गुरु-ग्रन्थ वेद कुरआन यही,
मन्दिर मस्जिद की शान यही,
ईसा का सुभग स्थान यही,

है यही सिखों को गुरुद्वारा।
'जय हिन्द' मन्त्र हमको प्यारा॥

यह महामन्त्र नेताजी का,
प्रिय 'वीर जवाहर' के जी का,
शुचि हार 'लक्ष्मी' के ही का,

चालीस कोटि का चख तारा।
'जय हिन्द' मन्त्र हमको प्यारा॥

यह है स्वदेश का स्वाभिमान,
यह है वीरों का आन-बान,
है यही क्रान्ति का आह्वान,

इसके भय से पशुबल हारा।
'जय हिन्द' मन्त्र हमको प्यारा॥

यह आज़ादी का अस्त्र प्रबल,
इसका बल पा हो निबल सबल,
सुन अरिगण में हो उथल-पुथल,
क्षण में करदे वारा न्यारा ।
'जय हिन्द' मन्त्र हमको प्यारा ।।

कितने इस पर बलिदान हुए,
कितने इस पर कुर्बान हुए,
कितने इसके प्रिय-प्रान हुए,
कितनों ने तन मन धन वारा ।
'जय हिन्द' मन्त्र हमको प्यारा ।।

सोतों को जगा दिया इसने,
सबका डर भगा दिया इसने,
निज पथ पर लगा दिया इसने,
दुर्नीति-ताड़िका को मारा ।
'जय हिन्द' मन्त्र हमको प्यारा ।।

अब हम न रहेंगे पराधीन,
अब हम न रहेंगे दीन हीन,
अब अत्याचारों को कभी न,
हम सहें, हृदय ध्रुव व्रत धारा ।
'जय हिन्द' मन्त्र हमको प्यारा ।।

बन आज़ादी के दीवाने,
तन पर सज केशरिया बाने,
अब गायेंगे मारू गाने,
हमको माता ने ललकारा ।
'जय हिन्द' मन्त्र हमको प्यारा ।।

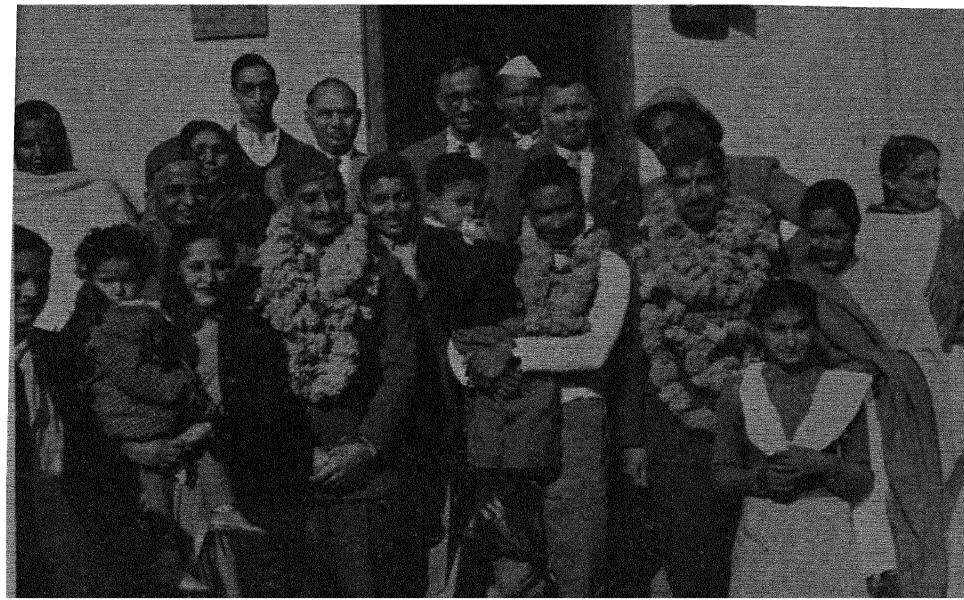

कै० सहगल, कै० शाहनवाज़ तथा लै० ढिल्लन रिहाई के पश्चात् अपने मित्रों के बीच।

आवें संकट सिर सहलेंगे,
फाँसी-फन्दों से खेलेंगे,
अपनी स्वतन्त्रता लेलेंगे,

'भारत छोड़ो' होगा नारा।
'जय हिन्द' मन्त्र हमको प्यारा॥

रिहाई का शुभ दिन

[श्री गिरजाशंकर जी पाण्डेय]

आज दिवाली, आज दिवाली।
जग के तममय शून्य गगन में फूट पड़ी उषा की लाली।

क्योंकर सूरज स्वर्ण लुटाता,
है कमलों का दल विकसाता।
बन्धनमुक्त बना अलियों को,
क्यों कलियों का उर उमगाता?

जीवन के निराश मरुथल में,
दूर दिखाई दी हरियाली।

ज्योति जगी है नगर-नगर में,
धूम मची है डगर-डगर में।
सिंहनाद 'जयहिन्द' ध्वनित है,
बच्चे-बच्चे के प्रिय स्वर में॥

भारत भू ने आज अचानक,
मानो लुटी हुई निधि पा ली।

अमर रहे नेता की बानी,
अमर रहे 'झाँसी की रानी'।
ढिल्लन, सहगल, शाहनवाज़ की,
युग युग तक हो अमर कहानी॥

जिनके तप बल से हो हत बल,
अरि ने झुक निज मुँह की खाली!

अपनी राष्ट्र-ध्वजा फहरादो,
वैदेशिक साम्राज्य हिलादो।
हम अवाध्य हैं हम अजेय हैं,
हम स्वतंत्र जग को दिखलादो॥

दूर नहीं अब मंजिल अपनी,
हमने प्रथम विजय है पा ली।
आज दिवाली आज दिवाली।

प्रयाण-गीत

[कवि-केहरि श्री 'कृपाण' जी]

प्रस्थान तुम करो।
प्रस्थान तुम करो, अरे प्रस्थान तुम करो॥

'दिल्ली चलो' हो मन्त्र यही हर जवान का।
'जय हिन्द' हो नारा प्रचुर हिन्दोस्तान का॥

निज को स्वदेश के लिये प्रदान तुम करो।
प्रस्थान तुम करो॥

माँ का पिया है दूध दिखाने चले चलो।
तुम दम्भियों के दम्भ मिटाने चले चलो॥
माता की मुक्ति हेतु शीश दान तुम करो।
प्रस्थान तुम करो॥

अपनी स्वतन्त्रता पै दिये ध्यान तुम चलो।
लेकर करों में शीश को जवान तुम चलो॥
शूरो! स्वदेश स्नेह-सुधा पान तुम करो।
प्रस्थान तुम करो॥

तुमको शपथ शहीदों के बलिदान की चलो।
तुमको शपथ है वेद की कुरआन की चलो॥
आज़ाद हो स्वदेश अनुष्ठान तुम करो।
प्रस्थान तुम करो॥

आँखों में लिये जोशे-जलियान तुम चलो।
भूलो न बयानीस का बलिदान तुम चलो॥
उर में प्रकट सुभाष-स्वाभिमान तुम करो।
प्रस्थान तुम करो॥

अब लालदुर्ग में ही हों नमाज आरती।
देखो कुतुब बुला रही जमुना पुकारती॥
चलकर 'कृपाण' क्रान्ति का आह्वान तुम करो।
प्रस्थान तुम करो॥

अक़ीदत के फूल

[जनाब मु० गंगाप्रसाद साहब 'नाज़ुक' फ़ीरोज़ाबादी]

(१)

नेताजी

बहादुर ऐ आज़ाद नेता सुभाष,
तुझे करते हैं हिन्द वाले तलाश।

रही कार आमद[1] तेरी रह बरी[2],
बड़े शान से तूने की अफ़सरी।

उठा ले के हाथों में तेग़ो-तबर[3],
तेरे हुक्म में था बला का असर।

निगाहों में ले करके बर्क़ो-शरार[4],
ग़ुलामों का बन कर बड़ा ग़म-गुसार[5]।

तेरे हर नफ़स[6] में है जोशे-अमल,
क़दम तेरे आख़िर उठे बर महल[7]।

बलाओं से बे ख़ौफ़ टकरा गया,
मुक़ाबिल उदू[8] तेरे चकरा गया।

तेरा कौल वो वर मज़ारे-ज़फ़र[9],
तेरे[10] दिल में है नक़्श इक कल हजर।

१—सफल, २—नेतृत्व, ३—शस्त्र, ४—बिजली और अग्नि, ५—हमदर्द, ६—साँस, ७—उचित समय पर, ८—शत्रु ९—बहादुर-शाह 'ज़फ़र' बादशाह की क़ब्र पर, १०—तेरे हृदय अमिट रेखा है।

वह नारा तेरा याद है ऐ मुशरि[1],
'करो सब निछावर बनो सब फ़कीर।'

वो मजमे में रंगून के एक बार,
कलाई में जो तेरे लिपटा था हार।

थे लाखों जमा उस जगह मर्दो-जन[2],
हुआ जब तेरे हार का औक्शन[3]।

वहाँ फिर तो बोली पै बोली बढ़ी,
तेरे हार की ख़ूब कीमत चढ़ी।

ग़रज़ सात लाख उसकी कीमत लगी,
तो दिल में तेरे ऐसी ख्वाहिश हुई।

कि बोली को कर दें यहीं पर तमाम,
बहुत लग चुका हार का मेरे दाम।

कि इतने में दीवाना इक हिन्द का,
तेरे पाँव में बेतहाशा गिरा।

वह कहने लगा यूँ कि 'मेरा है हार,
मेरी सारी दौलत है इस पै निसार।

तेरे हिज्र में सारा हिन्दोस्ताँ,
हक़ीक़त में खुद पर है बारे गराँ[4]।

करोड़ों दिलों का है तू बादशाह,
तेरी फिक्र में है ये भारत तबाह।

१—मित्र, २—स्त्री पुरुष, ३—नीलाम ४—असहनाय बोझ।

(२)

कैप्टन शाहनवाज़

खित्तये पजाब को चमका दिया,
मंसबे अंग्रेज़ को ठुकरा दिया।

जोश से इस्लाम का जौहर ग़रज़,
सारे हिन्दुस्तान को दिखला दिया।

क़ौम के मानी हैं क्या यह 'लीग' को,
जज़बए-हुब्बे-वतन[1] समझा दिया।

ख़ुदपरस्तों को अमल का दर्स[2] दे,
दर हक़ीक़त तूने तो शर्मा दिया।

नामलेवा आज तेरा हिन्द है,
तूने क़ौमी गीत ऐसा गा दिया।

एशो-इसरत[3] को बराये-हिन्द[4] तू,
शौक़ से हँसते हुये ठुकरा दिया।

हिन्द की मुर्दा रगों में मरहबा[5],
ख़ून ताज़ा तूने फिर गर्मा दिया।

फूल बन कर कैप्टन शाहनवाज़,
तूने चमने-हिन्द को महका दिया॥

१—देशभक्ति की भावना, २—सबक़, ३—भोग विलास, ४—भारतवर्ष के लिये, ५—शाबास।

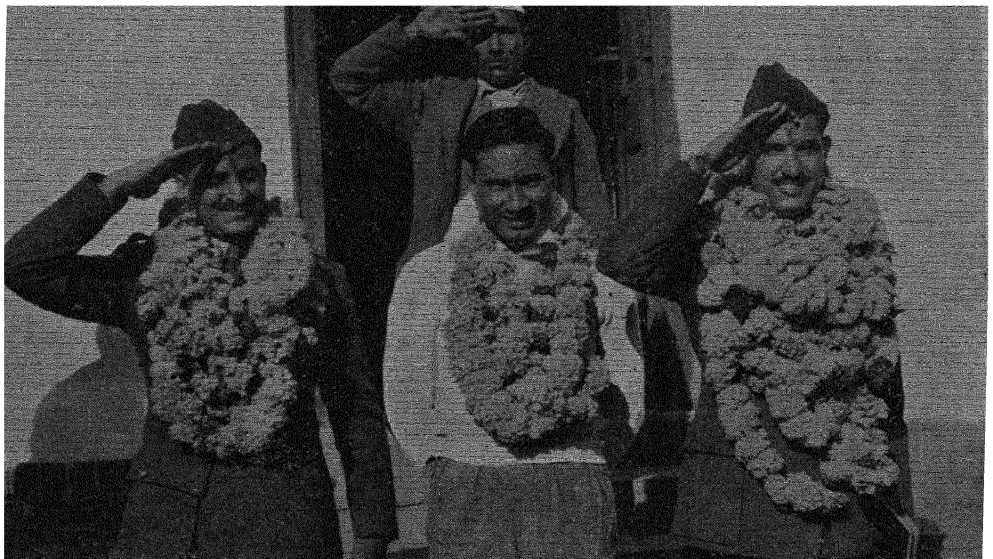

कै० सहगल, ढिल्लन, तथा शाहनवाज रिहाई के पश्चात् स्वागतार्थ एकत्रित भीड़ को अभिवादन कर रहे हैं।

(३)

कप्तान सहगल

ज़मी तेरी है तेरा ही ज़मा है,
तेरी मुट्ठी में दौरे आसमाँ है।
तेरे जोशे अमल के आज बल पर,
तेरे ताबे में यह सारा जहां है।
तेरे अज़मे[1]—मुसमसिम के तरुदुक[2],
तेरा मुँह चूम लेती कहकशां है।
तेरी आवाज़ तनहा दर हक़ीक़त,
करोड़ों बेज़ुबानों की ज़बां है।
बजा है क़ौम गर कहती है तुझको,
सपूते मादरे हिन्दोस्तां है।
नहीं रहती है तुझको इसकी परवा,
उदू[3] है सामने तीरो-कमां है।
सही मानो में हुर्रियत[4] का जज्बा,
रवां है तेरी रग-रग में रवाँ है।
ख़ुप्त रक्खे यह समझा राज़ तूने,
ग़ुलामी हम ग़ुलामों पर गरां है।
तू है ईमानो-नेकी का फरिश्ता,
तेरा ईमान तेरा पासबां[5] है।
बढ़ाई तूने 'सर अच्छू[6]' की अज़मत[7],
हक़ीक़त में तू आली खान्दां है।
सलामत तू रहे कप्तान सहगल,
सलामत तेरी फ़ौजी दास्तां है।

१—दृढ़ निश्चय २—बलिहार ३—दुश्मन। ४—आज़ादी ५—रक्षक ६—सहगल के पिता सर अच्छूराम ७—इज़्ज़त।

(४)

कप्तान ढिल्लन

बबर शेर ए हिन्द माता के लाल,
बढ़े तेरा दुनिया में जाहो-जलाल[1]।
बना कर तुझे कौन रखता असीर[2],
हक़ीकत में यह बात थी टेढ़ी खीर।

वतन का चमकता सितारा है तू,
करोड़ों दिलों को सहारा है तू।
वतन की तेरे दम से है आबरू,
ग़रीबों की तू है दिली आरज़ू।

तू ही है तू ही हिन्द माता की शान,
बहसरत[3] तुझे देखता है जहान।
तेरे हर इशारे मे बिजली का ज़ोर,
तेरे हुक्म में है क़यामत का शोर।

इरादे तेरे देखते ही अटल,
बिल-आख़िर[4] गई घर को वापस अजल[5]
है पीछे अभी तेरे आज़ाद फौज,
तुझे देखना है तो देख अपना ओज[6]।

ख़ुदा और ज़माना तेर साथ है,
वतन की अब इज्ज़त तेरे हाथ है।
है तुझ पर हमें नाज़ कप्तान ढिल्लन।
है तुझ पर वतन आज क़ुर्बान ढिल्लन॥

१—प्रतिष्ठा और तेज, २—क़ैदी, आकांक्षाओं के साथ, ४—आख़िरकार, ५—मत्यु, ६—महानता।

डा० कुमारी लक्ष्मी
(झाँसी वाली रानी रेजीमेन्ट की अधिनेत्री)

(५)

कैप्टन लक्ष्मी

खिताबे-कैप्टन तुझको मुबारिक लक्ष्मी रानी,
तेरे इक नाम पर झाँसी का किस्सा याद आता है।

दिलेराने-वतन[1] के आज सर ख़म[2] हैं तेरे आगे,
उदू[3] भी आज तेरे सामने गर्दन झुकाता है।

ज़मीने-हिन्द[4] पर तू चाँद बनकर जगमगायेगी।
क़यामत तक तेरी अहले-वतन[5] को याद आवेगी॥

"आज़ाद हिन्द फौज का आख़िर हुआ क़याम,
मक़सद यह था कि हिन्द को आज़ाद अब करो।

नारा था उसका एक सदाकत के साथ ये,
बर्मा से सूए दिल्ली बराबर बढ़े चलो॥

१—देश के वीरों को, २—झुके हुये, ३—दुश्मन, ४—भारत के मस्तक पर, ५—प्रलय।

लालक़िले से

[हज़रत जाँबाज़]

लाल पत्थर के क़िले ए बादशाहों के निशाँ
तेरे एवानों[1] से वाबस्ता है मेरी दास्ताँ
तेरे मीनारों ने देखा परचमे[2]-हिन्दोस्ताँ
तेरी दीवारों ने देखी अज़ मते[3]-शाहेजहाँ

चूमते थे पाँव तेरे हर सुबह गंगोजमन
तेरे एवानों की इक इक ईंट है शाने वतन
तेरे दर्वाजों से तक़दीरे जहाँ बनती रही
बात जो निकली यहाँ से दास्ताँ बनती रही

तेरे दर्वाजों की जंजीरों से तक़दीरें बनीं
तेरी ही सुर्ख़ी से इंग्लीस्ताँ की तस्वीरें बनी
तेरे सर पर आस्मानों के सितारों का हुजूम
तेरे पहलू में है तेरे जी निसारों का हुजूम

तूने देखा है शाहनशाह ने हिन्दुतान को
और उनके दर पै झुकते शाने इंग्लिस्तान को
लाल पत्थर के किले ए बादशाहों के निशां
तेरे एवानों से वाबस्तां है मेरी दास्तां

(२)

तूने देखा है सितारों का वह ख़ूनी इन्क़िलाब
ख़ून में लिथड़ा हुआ अपने जवानों का शबाब[4]

१—छत, २—हिन्दुस्तान का झंडा, ३—शाहजहाँ की शान
४ यौवन ।

नया नाजुक जिस्म भी लोहे से गर्मा ये गये
और बहादुरशाह के बेटे भी बढ़ पाये गये

जुर्मे आज़ादी में सूली पर भी चढ़वाये गये
सैकड़ों बच्चों को आँसू खूँ के रुलवाये गये

तूने[1] देखी ताजदारे-हिन्द की तज़लील भी
रुबरु तेरे बुझी है आफ़रीं क़न्दील भी

चाँदतारों से भी जो मासूम शर्माई गईं
वो तुम्हारे सामने बेआबरु लाई गईं

तेरी दीवारों पै लटकाये गये नौजवां
जुर्म था जिनका कि हो आज़ादिये हिन्दोस्तां

तूने नज़्ज़ारा किया है ज़ुल्मो-इस्तबदाद[2] का
तूने हंगामा सुना मज़लूम की फ़र्याद का

लाल पत्थर के क़िले ए बादशाहों के निशां
तेरे एवानों से बावस्ता है मेरी दास्तां।

(३)

तेरी दीवारों के पीछे आज फिर कुछ नौजवां
लिख रहे हैं मौत के दामन पै अपनी दास्तां

सल्तनत ने इक फसाना सा सुनाया है इन्हें
वक्त के क़ानून ने मुजरिम बनाया है इन्हें

१—इसे हिन्दुस्तान के बादशाह का अपमान भी देखा, वह बहादुरी दीपक भी तो तेरे सामने ही बुझा है। २—भयंकर अत्याचार, ३—सताये हुये।

इनकी उम्मीदों को ये बर्बाद कर सकते नहीं
वक्त गो मारे उन्हें लेकिन वो मरसकते नहीं

मसलहत[1] का है तक़ाज़ा वक्त की आवाज़ है
रहे आज़ादी में मरने का यही अन्दाज़ है

वो अजीज़ा[2] ने वतन हैं अस्ल में जाने-वतन
शान है इनकी वतन से और वो शाने-वतन

ये अमानत क़ौम की है तेरी दीवारों में बन्द
ये सितारे क़ौम के हैं तरे मीनारों में बन्द

तेरे ही मासूम सहें गर सताई जांयगी
तेरी दीवारों की बुनियादें हिलाई जांयगी

लाल पत्थर के क़िले ए बादशाहो के निशां
तेरे एवानों से बावस्ता है मेरी दास्तां

(४)

अपने महमानों को तू 'जाँबाज़' का पैग़ाम दे
यह सलामे-आजिज़ाना[3] सुबह दे और शाम दे

आज खाता हूं तुम्हारी नौजवानी की क़सम
अज़मो-इस्तक़ लाल[4] की और ज़िंदगानी की कसम

खा रहा हूं जज़बये-शौकशहादत[5] की कसम
इस दिले नाकाम की नाकाम उल्फत[6] की कसम

१—नीति, २—देश के प्यारे। ३—नम्र नमस्कार ४—हरादा और हिम्मत ५—बलिदान की भावना ६—असफल प्रेम।

शौक से झेलूँगा सर पर मैं इताबे-सल्तनत[1]
ज़िन्दगानी में करूँगा इन्क़िलाबे-सल्तनत

मैं मुलूकियत[2] के दामन को करूँगा तार तार
टूट जायेगा मेरी मिज़राब से कोहना[3] सितार

मैं निहन्गों[4] से लड़ूँगा और तूफ़ानों से भी
मग़रिबी[5] आईन से यूरोप के इन्सानों से भी

ये दिले 'जाँबाज़' अब सदमात सह सकता नहीं
ये वतन अब देर तक महकूम[6] रह सकता नहीं

लाल पत्थर के क़िले ए बादशाहों के निशां
तेरे एवानों से बावस्ता है मेरी दास्तां

१—शासन की कोप दृष्टि २—स्वामित्व ३—पुरानी
४—घड़ियाल ५—पश्चिमी क़ानून ६—गुलाम।

लौटो सुभाष

[श्री रतनलाल बंसल]

देव ! पधारो खोज रहे 'बापू' तुमको हो व्याकुल मन,
वीर जवाहर के मन में भी घुमड़ घुमड़ उठता चिन्तन,
कौन देश के कौन प्रान्त में आज तुम्हारा सिहासन,
छिपे जहाँ हो ए नरकेहरि ! कहो कौन सा है वह वन,

खड़ा 'हिमालय' बाट जोहता ले पाषाण हृदय में पीर।
देव ! पधारो, आतुर पदप्रक्षालन को गंगा का नीर॥

रह रह तुम्हें पुकार रही हैं, यमुना की नीली धारें,
सूनी आखों राह देखतीं लाल किले की दीवारें,
पैंतीस लक्ष मर गये जो इक इक दाने को तरस तरस—
बंगभूमि के उन पुत्रों की खोज रही हैं चीत्कारें,

पागल बनकर खोज रही है, 'बलिया' औ' 'चिमूर' की आह।
देव ! पधारो देख रही है 'हेमू' की माँ तेरी राह॥

इस निर्वासन से तो अच्छे निज स्वदेश कारा के पल,
लौट पड़े थे इक दिन तुम ही यूरुप से ले भाव अटल,
खलबल खलबल खौल उठा था उस दिन गंगा जी का जल,
रोगग्रस्त थे तुम, लेकिन कब रोक सका था शासक दल,

निर्मोही ! फिर आज देश से हुआ कौन ऐसा अपराध।
माँ रोती है, किन्तु कहीं बैठे हो वज्र-मौन को साध॥

बैठे चिन्तन करते होगे, किसी पेड़ की ले छाया,
फटी पुरानी वर्दी से ढांपे अपनी क्षीण काया,
बन बन ही है अरे भटकना तो 'अरावली' भी तो है।
जिसमें वर्षों तक 'प्रताप' ने अपना झंडा लहराया,

चले गये थे जैसे, वैसे ही लौटो हे वीर महान।
रहे सांत्वना इतनी तो, भारत में ही तुम अन्तर्ध्यान॥

भूल गये क्या 'बर्मा' में तुमने हमको जो आज्ञा दी,
ख़ून मुझे तुम दो, मैं तुमको दूँगा निश्चित आज़ादी,
आज ख़ून देने को आतुर खड़े सिपाही हैं लाखों,
आँख पसारे देख रहे हैं कब आवेंगे 'नेताजी'

'जौहर' करने बहिन खड़ी हैं आज देश में आग भरी।
आ जा अरे लाड़ले कैसे ही, देने को चिनगारी

'आज़ाद हिन्द सेना' के सैनिक खोज रहे निज सेनानी,
खोज रहे लाखों जवान ल दिल में हसरत दीवानी,
अरे शहीदों के राजा! दौड़ो, देखो कोई कहता—
है स्वतन्त्रता आने को, पर माँग रही है कुर्बानी,

व्याकुल मन से तुम्हें खोजते ढिल्लन सहगल, शाहनवाज़।
कौन आज्ञा दे बढ़ने की? बलिवेदी फिर सूनी आज॥

जय हिन्द